|| NAMO TITTHASSA ||

GACCHADHIPATI (SPIRITUAL SOVEREIGN)
JAINACHARYA SHRIMADVIJAY
YUGBHUSHANSURI
(PANDIT MAHARAJ SAHEB)

(मूल गुजराती प्रति का अनुवाद)
संदर्भ क्र. 202211G–13
दि: 16/11/2022, बुधवार
गीतार्थ गंगा, बोरिवली, मुंबई

जाहिर ज्ञापन

कलियुग की दु:खद परिस्थिति के कारण, तीर्थरक्षा आदि विषयों में जागृति के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कराना आवश्यक बना है। कभी अन्य सार्वजनिक माध्यमों का भी उपयोग ज़रूरी बनता है। (हालांकि, काफी समय से अन्य धार्मिक समाचार या हितोपदेश आदि के लिए सोशल मीडिया का उपयोग चतुर्विध संघ में अच्छे खासे पैमाने पर शुरू हो ही चुका है।)

मुझे मानने वाले जो श्रावक-श्राविका सोशल मीडिया आदि में व्यक्तिगत तौर पर चर्चा करते हो या मेसेज लिखते हो वे निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखें:

सामने वाला चाहे कितनी भी निचली कक्षा पर उतर जाएं,
बातचीत-व्यवहार में कोई मर्यादा न रखें,
जिनशासन या धर्माचार्य की गरिमा पर कीचड़ उछालने की कोशिश करें,
आरोपों या असभ्य बयानों की झड़ी बरसाएं,
फिर भी मुझे मानने वाले श्रावक-श्राविका असभ्य भाषा, बेबुनियादी आरोप और व्यक्तित्व हनन करने वाली (व्यक्तित्व को विकृत रूप से दर्शाने वाली) भाषा का उपयोग न करे - यह मेरा आदेश है, क्योंकि हम सब उत्तम आशय से धर्मरक्षा का कार्य करने निकले है।

मैंने भी मेरी ओर से जितने ज्ञापन आदि जारी होते हैं, उनमें असभ्य भाषा या बेबुनियादी आरोप या किसी के चरित्र को विकृत रूप से दर्शाने की पद्धति को स्थान नहीं दिया है।

हाँ, तीर्थरक्षा आदि की सच्ची बातों पर जब आक्रमण हो तो अडिग रहकर सच का समर्थन देने के लिए उचित तरीके से सच्चा, ठोस और तर्कपूर्ण उत्तर देना, दृढ़तापूर्वक देना, यह प्रत्येक सक्षम व्यक्ति का तीर्थरक्षा आदि के लिए कर्तव्य है, काफी निर्जरा और पुण्यबंध का कारण है, लेकिन असभ्य भाषा प्रयोग आदि द्वारा इस उत्तम कर्तव्य को बिगाडना नहीं चाहिए।

इसके बावजूद यदि कोई ऐसी निचली कक्षा की भाषा का प्रयोग करता है, तो वह मुझे मंज़ूर नहीं है और उसका मैं खेद व्यक्त करता हूं।

हस्ताक्षर
(ग. आ. विजय युगभूषणसूरि)

Education Book Centre, 133, Gala Complex, Din Dayal Upadhyay Road, Mulund (W), Mumbai 80, India
Whatsapp No.: +91 99300 11400 | Email: info@jyot.in